Result Mitra Daily Magazine

विष्णुपद और महाबोधि मंदिर

हालिया सन्दर्भ :-

- वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने केन्द्रीय बजट भाषण में घोषणा की कि बिहार के गया के विष्णुपद मंदिर एवं बोधगया में महाबोधि मंदिर के लिए कॉरिडोर बनाई जाएगी।
- वित्त मंत्री के अनुसार इन्हें सफल काशी विश्वनाथ मंदिर कॉरिडोर की तर्ज पर विकसित किया जाएगा ताकि इन्हें विश्वस्तरीय तीर्थ और पर्यटन स्थलों में परिवर्तित किया जा सके।
- श्रीमती रमण ने कहा कि चूंकि इन स्थलों पर बडी संख्या में तीर्थयात्री एवं पर्यटक आते हैं, इसलिए बुनियादी सुविधाओं को विकसित किए जाने की आवश्यकता है।

विष्णुपद मंदिर

- यह मंदिर भगवान विष्णु से संबंधित है।
- राज्य की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार किंवदंती है कि गयानुर नामक राक्षस ने वर प्राप्त किया था कि जो भी उसके दर्शन करेगा, उसे मोक्ष की प्राप्ति होगी।
- गयासुर ने इसका दुरूपयोग करना शुरू किया, जिसके कारण भगवान विष्णु को हस्तक्षेप करना पडा।

- भगवान विष्णु ने अपना दाहिना पैर गयासुर के सिर पर रखकर दबा दिया, जिससे वह पाताललोक चला गया।
- मंदिर में भगवान विष्णु का 40 cm लंबे पैर के निशान है, जिनके दर्शन करने हजारों श्रद्धालु आते है।
- भगवान विष्णु ने उसे आशीर्वाद दिया कि प्रत्येक दिन कोई-न-कोई तुम्हें भोजन कराएगा, और इसलिए प्रत्येक दिन हजारों की संख्या में लोग यहां आते है।
- भगवान विष्णु के पैर में चक्र, शंख, गदा सहित 9 अलग-अलग प्रतीक है, जो भगवान विष्णु के हथियार है।
- यह मंदिर मोक्षदायिनी फल्गु नदी के किनारे स्थित है, जिसकी चर्चा रामायण में भी है।
- वर्तमान में स्थित मंदिर का निर्माण इंदौर की अहिल्याबाई होल्कर ने 1787 में करवाया था।
- संरचना के शीर्ष पर 50 kg का सोने का झंडा है, जो बाल गोविंद सेन ने दान में दिया था।
- माधवाचार्य, वल्लभाचार्य एवं चैतन्य महाप्रभु ने भी इस मंदिर का दौरा किया था।
- यह मंदिर सोने को परखने वाले कसौटी पत्थर से बना है।
- मंदिर की कुल ऊँचाई लगभग 30 मीटर है।
- यहां लोग पितरों (पूर्वजों) की मुक्ति के लिए पिंडदान करते है।
- मान्यता है कि यहां श्री राम ने भी सीता के साथ दशरथ की मुक्ति के लिए पिंडदान किया था।
- मंदिर के सामने फल्गु नदी के पूर्वी तट पर सीता कुण्ड है, जहां सीता ने दशरथ का पिंडदान किया था।
- गर्भगृह में 50 kg चाँदी का छत्र एवं 50 kg चाँदी का अष्टभुजाकार ढाँचा निर्मित है, जिसके अंदर भगवान विष्णु का चरण है।
- यहां पितरों के श्राद्ध-कर्म किए जाने का उल्लेख पुराणों में भी है।
- मंदिर परिसर में भगवान नरसिंह एवं भगवान शिव के अवतार फल्गीश्वर का भी मंदिर है।
- विष्णु के चरण बेसाल्ट पत्थर पर उत्कीर्णित है, जबकि मंदिर में ग्रेनाइट का भी प्रयोग हुआ है।

Result Mitra TM

कसौटी पत्थर (Touch Stone)

- फिल्ड स्टोन, स्लेट या लाइडाइट के रूप में गहरे भूरे रंग के होते है, जो स्वर्ण आदि मूल्यवान धातुओं को परखने में काम आता है।
- इसका तल बहुत ही ज्यादा चिकना होता है, जिस पर नरम धातुओं को रगडे जाने से निशान बन जाता है।
- सोने की विभिन्न मिश्रधातुएं कसौटी पत्थर पर अलग-अलग निशान बनाती है और इन्हीं निशानों के आधार पर स्वर्ण की शुद्धता का अनुमान लगाया जाता है।

फल्गु नदी

- बिहार राज्य में प्रवाह,
- झारखंड के पलामू जिले से उद्गम,
- गया के निकट लीलाजन एवं मोहना नदी के संगम से फल्गु नदी का संगम
- पुनपुन नदी पटना के पास गंगा में मिलती है।
- हिन्दू एवं बौद्ध धर्म, दोनों के लिए धार्मिक महत्व,
- महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति निरंजना नदी के किनारे दी।

नोट :- फल्गु को निरंजना नाम से भी प्रकाश जाता है।

रबर डैम

- Sep 2022 में भारत के सबसे लंबे रबर डैम का उद्घाटन नीतिश कुमार द्वारा किया गया।
- यह फल्गु नदी पर निर्मित है।
- यह 3 मीटर ऊँचा एवं 411 मीटर लंबा है एवं 96 मीटर चौडा है।
- इसका निर्माण ऑस्ट्रिया की कंपनी एवं हैदराबाद की एक एजेंसी ने मिलकर किया है।
- यह 17mm मोटे रबर परत से बनाया गया है, जो बुलेटप्रुफ है।
- इसका नाम गया जी रबर डैम है।

नोट :- भारत का पहला रबर डैम मंझावती रबर डैम है, जो आंध्र प्रदेश में स्थित है।

Result Mitra TM

महाबोधि मंदिर

- यह बिहार का पहला यूनेस्को विश्व विरासत स्थल है, जिसे यह दर्जा 2002 में प्राप्त हुआ था।
- यह मंदिर महाबोधि वृक्ष के पूर्व में स्थित है, जहाँ महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।
- यह एक विशिष्ट प्रकार का मंदिर है, जिसकी ऊँचाई 170 फीट है।
- यूनेस्को की वेबसाइट के अनुसार, महाबोधि मंदिर परिसर में एक मंदिर तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक द्वारा भी निर्मित किया गया था, जबकि वर्तमान मंदिर 5वी-6वीं शताब्दी के आस-पास का है।
- इसका निर्माण गुप्त वंश के अंत समय में पूरी तरह ईंटो से निर्मित है।
- मंदिर की बनावट अशोक द्वारा निर्मित स्तूपों की तरह है।
- मंदिर में गौतम बुद्ध की प्रतिमा पदमासन मुद्रा में है।
- बिहार वेबसाइट के अनुसार वर्तमान बोधि वृक्ष पांचवी पीढी का है।
- 2016 में नालंदा विश्वविद्यालय बौद्ध परिसर को भी UNESCO द्वारा विश्व विरासत स्थल का दर्जा दिया गया।

Result Mitra